711
М

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1206/1014

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No. 711

19-1

891.431
Sh23M

वन्देमातरम

महात्मा गांधी की लड़ाई

जो कोई कौपी मेरी छापे या छपवाय ।
कुलटा उसका होले गारत अन्धा और काढी होजाय ॥

लेखक—

रामचन्द्र शर्मा सहाहरा

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
30 MAR. 1931

प्रकाशक—

द्वारिकाप्रसाद शर्मा नरेला निवासी

द्वितीय बार १००० मू० -)

मार्तण्ड प्रेस देहली में छपा

महात्मा गान्धी की लड़ाई

दुनियां का तु पालन करता तूने रचा सकल संसार ।
लीला गाते लाखों मर गये नहीं किसी ने पाया पार ॥
चन्द आदमी ऐसे होगये जैसे गान्धी हुए औतार ।
फेरी निगाह जिसके ऊपर उसको करदिया मालामाल ॥
आला ज्ञान हुये दुनियाँ में अबतक जिनको रहे सराह ।
करूँ बन्दना मैं भारत की ईश्वर इसपर करें सहाय ॥
कभी दूध की नदी बहे थी अब पानी को नहीं है छाय ।
गाँधी का मैं आल्हा गाऊं सुनलो भाई कान लगाय ॥
जिसने जुल्म किया दुनियाँ में उसका नाम लियैयानाय ॥
सतयुग में हिरनाकुश मारा नरसिंह रूप धर औतार ।
रामचन्द्र ने रावण मारा लंका करदी पनियाढार ॥
द्वापर कंस कृष्ण ने मारा दुनियां का दिया भार उतार ॥
आतंपंजुम और जवाहर कलजुग अनी जुटी है यार ।
गवर्नर और गांधीजी का रण में पड़ा मार ना आय ।
वीर जवाहर सजके निकले असहयोग की ढाल लगाय ॥
बहुत से नेता इसी फिक्र में स्वर्गलोक में पहुंचे आय ।
बहुत से झूठे बना मुकद्दमे काले पानी दिये पहुंचाय ॥
सन उन्नीस में बंधा मोर्चा चक्कर गवर्मेंट का जाय ।
लार्ड रीडिंग ने फिर आकर नया मोर्चा दिया लगाय ॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
GOVT
No. 711
Date 18.12.71

चोरा चोरी के खेतों में हिंदू मुस्लिम दिये लड़ाय ।
नहीं इंसाफ रहा अब यहांपर भारत गारत दिया कर ॥
गऊ और सूअर दोना खाके हिंदू मुस्लिम दिये लड़ाय ।
खबरें पहुंची गाँधीजी पर दिल में बहुत गये घबराय ॥
मन के चीते भये गवर्मेंण्ट के देशभक्त की होगई हार ।
बीत गये सौ साल मुसीबत भुगते था सारा संसार ॥
नये नये टैक्स लगे भारत में परजा हुई हाल बेहाल ।
चिल्लाते दुख पाते पाते शुरू तीस का होगयो साल ॥
पलटा खाया गांधीजी ने मन गुस्सा भया अपार ।
प्रस्ताव यह पास कराया अब हम होंगे खुद मुख्त्यार ॥
सन तीस के शुरू होते ही वायसराय को दे दिया तार ।
हम लड़ने को फिर तयार हैं भली करलो पुलिस सवार
पुलिस वालों को गवरमेंट ने लम्बी लकड़ी दी मंगवाय ।
गांठ गांठ में कड़ी जड़ाकर नीचे पोला दिया लगाय ॥
लम्बे सांटे दिये बगल में सनन सनन जो रहे सनाय ।
लट्टू वाली बेंत मगाई जिसकी मार सही ना जाय ॥
बारूद गोली बम में कीनीं जहाज हवाई लिये मंगाय ।
चाकू तक नहीं रक्खे रैयत ऐसा दिया हुक्म सुनाय ॥
मुलाकात अर्विन से करके ग्यारह शर्तें दई बताय ।
या तो शर्त हमारी मानो नहीं हम देंगे जंग मचाय ॥

नशा हकूमत का अर्विन को कुछ खातिर में लाया नायं ।
पहली तरह दबालें अब भी गांधी बिचारा कौन बलाय ॥
साबरमती जाकर गांधी ने अपना आश्रम खोला जाय ।
वालंटियर भर्ती होने को जगह २ दी खबर पठाय ॥
अमीर गरीब कोई आजाये यहां पर मिले नौकरी नाय ।
ले बिस्तर लेटे हैं जमीं पर भूख लगे तो चना चबाय ॥
जो हथियार उठावे कोई चाहे जितनी मार लगाय ।
अंगुल अंगुल दुश्मन काटे जरा न मुखसे निकले हाय ॥
फिर भेजा कासिद गांधीजी ने वाइसराय से कही यह जाय ।
पहले नमक बनावें जाकर बन्दोबस्त लीजे करवाय ॥
दिया जवाब यह वाइसराय ने हमको नहीं है कुछ परवाह ।
हिन्दुस्तानी भूखे कुत्ते टुकड़ा देकर दें दबाय ॥
खबर पहुंच गई गान्धीजी पर मनमें गये बहुत हरषाय ।
जुड़ी कचहरी जवाहरलाल की बड़े बड़े लीडर बैठे आय ॥
सिन्ध गुजरात गूंजने लागे और मदरास उठा बल खाय ।
बम्बई किरांची और पंजाबी और बंगाली उठे रिसाय ॥
बनके दूल्हा बीर जवाहर मोतीलाल के राजकुमार ।
आके कोने में भारत के महा तलक दई ललकार ॥
जिसको गैरत अपनी कौम की वह मरने से नहीं घबराय ।
लड़े जो दुश्मन से रन खेतों में स्वर्गलोक को सीधा जाय ॥
मरना सीखो हिंदोस्तानी और किसी को मारो नांय ।

विश्वासघाती जो करे कौम से उसका पाप उसे खाजाय ॥
दुखदाई कानून बने जो उनको एक मानियो नाय ।
आलस मोह दिल में ना लाओ चाहे जान रहै चाहै जाय ॥
आजादी हो भारतवर्ष को अपना नाम अमर कर जाय ।
पड़े सामना जब दुश्मन से गांडू भागे पीठ दिखाय ॥
बारह मार्च चार बजे थे जब फौजों का हुआ फराय ।
बुड्ढा जबरल चला नमक को एक लंगोटा लई लगाय ॥
पवन चले थी मन्द सुगन्धी पक्षी रहे थे राग सुनाय ।
खड़ी हजारों वहां स्त्री थीं रन के मंगल रहीं मनाय ॥
कस्तूरी बाई ने माला अपने कर से दई पहनाय ।
करी प्रतिज्ञा गान्धीजी ने ऊपर को दिया हाथ उठाय ॥
क्यों भारत आजाद कराद्ूं या जीवड़ा को दऊं गंवाय ।
लाखों खड़े आदमी वहां पर जै के नारे रहे लगाय ॥
पैदल पैदल चले गान्धी चार मील पर पहुंचे जाय ।
नित होते उपदेश वहां पर जहां गांधी का पड़े पड़ाव ॥
जो उपदेश सुने गाँधी का वेही देश भक्त बनजाय ।
करें प्रतिज्ञा दादे पोता चाहे जान रहै चाहे जाय ॥
दोसौ मील पैदल चलकर एक माह में पहुंचे आय ।
बंदोबस्त किया अंगरेजों ने काबुली पलटन दई पहुंचाय ॥
कयी हजार फौज थी वहां पर बन्दूक और लिए कृपान ।

इश्वर निकलथा बुड्डा गांधी जिसके संग में उन्नासी जवान ॥
सारा राम ने जब रावण को विभीषण को दिया राज गहाय
मारा कृष्ण ने जब कंस को उग्रसेन दिया तिलक चढ़ाय ॥
कौरव पांडव जूझे रण में नहीं कृष्ण ने लियो हथियार ।
जोर्ज पंचम और जवाहर सबके बनो जुड़ी है यार ॥
नहीं हथियार उठावें गांधी चाहे आन रहे चाहे जाय ।
भारत कारन गांधी लड़ रहे नहीं राज की कुछ परवाय ॥
गांव गांव में गांधीजी ने ऐसा दिया हुकम सुनाय ।
जिस दिन नमक बनावें हम भी उसी रोज लो सभी बनाय ॥
छै तारीख को हुई तैयारी सूरज बादल रहा शरमाय ।
झिलमिल झिलमिल तारे करते चन्द्रा सूरत रहा लखाय ॥
खुशी होरही नमक की देवी जब आओ गांधी पहुंचे आय ।
जय हो महात्मा गांधीजी की सिंधू नारा रहा लगाय ॥
जिस रोज लंका राम चढ़े थे हुआ समुन्दर खुशी अपार ।
उससे ज्यादा खुशी आज थी यह कलियुग के हैं औतार ॥
भजन करे है महात्मा गान्धी रामचरन में ध्यान लगाय ।
लाखों मनुष्य दर्शन की खातिर चार बजे से पहुंचे आय ॥
घड़ी महूरत लगन शोधके आठ बजे का वक्त मनाय ।
चले महात्मा नमक बनाने लगा भीरया वहां पर जाय ॥
देखकर सूरत गान्धीजी की भीकर गये तमारा खाय ॥

गिरे हथियार सबों के करसे मानों गया अहरिया खाय ।
खड़े २ सब देखें वहां पर गांधीजी रहे नमक बनाय ।
जब बालेन्टियर लगे बनाने उनमें दोनों मार लगाय ॥
खड़ो तमाशा रैयत देखे मनमें करगही सोच विचार ।
तड़तड़ लाठी पड़े पुलिस की बहने लगी खून की धार ॥
कोई २ जोधा होश गंवाकर बेसुध पड़े धरन मंझार ।
बेसुध होगये सारे जोधा उनकी सुरती दई बिसार ॥
जालिम जुलम करे जब कोई नहीं मजलूम उठावे हाथ ।
आखिर हार हो । जालिम की बुरा कहे उसको संसार ॥
हुई शिकस्त पुलिस को हरजा महात्मा गांधी जीते यार ।
जलभर हाकिम हरएक जोर वाइसराय को भेजा तार ॥
बुरी तरह हम हारे साहिब जगह गिरने को रही है नाथ ।
निहत्थों को मार लगाकर अपनी बुराई ली करवाय ॥
जीत का डंका बजा गांधी का नमक मोर्चे हुए तैयार ।
क्यों नहीं नमक आपका लूटें वाइसराय को दिया तार ॥
कहा वाइसराय ने हम नहीं डरते नमक लूटते बेशक जाय
बंदोबस्त हम सब करलेंगे चाहे कुश्त खून होजाय ॥
दगाबाज नहीं डरे दगा से लाखों जगह लिया जमाय ।
गांडू धोखा करे सदा से वक्त पड़े पै चूक न खाय ॥
यहाँ की बातें यहां रही भाई अब आगे का सुनो हवाल

अविन से यूं जाय पुकारा क्यों ना गांधी पकड़ा जाय ।
वाइसराय इंसाफ़ पसंद जो कहा ऐसा वाने नहीं सुहाय ।
इसको सुनकर अरविन बोला बैठा मैं ना रोस दबाय ॥
पहिले पकड़ो शाह जवाहर पीछे उसको देखा जाय ।
ताज खिलाफत को देता हूं जल्दी लूं मैं खबर मंगाय ।
खान बनाया नमक हरामी जिसने मुफ्त उड़ाया माल ।
लूट २ कांग्रेस को खागये फूल २ हुए मकर [illegible] ॥
अबका वक्त पड़ा लड़ने का वो दुश्मन से मिलगये जाय ।
बुरा भला कहते गांधी को झूटा झगड़ा रहे मचाय ॥
शूरवीर भारत के प्यारे मुसलमान सब पहुंचे आय ।
स्वराज की नैया में आकर एकदम कांधा दिया लगाय ॥
ऐसा जोर लगाया आकर गवर्नमेन्ट भी गई घबराय ।
रद्द गलत करदो रनखेतों मे भाई से भाई मिला आय ॥
सिक्ख इसाई और पारसी एकदम सभी उठे ललकार ।
हलचल मचगई सारे देशों मे कांपन लगी जुल्म सरकार ॥
नमक छिड़क दिया जख्मों ऊपर गुदा में लाठी दई चलाय
मार मार पानी में डाला ऊपर घोड़े दिये दौड़ाय ॥
मार मार गति ये कर दीनी ना किसीपर देखा जाय ।
मारने वाले टस २ रोवें पिटने वाले हंसते जायं ॥

गवर्मेन्ट ने झूठी अफवा सभी विलायत दी पहुँचाय ।
बालक बच्चे मारे हमारे बंगला में दी आग लगाय ॥
झूठी बात चले नहीं पैरों सच्ची बात छिपै है नाय ।
गांधी के अंग्रेज जो चेला वहां जाकर सबको दी दरसाय ॥
इन निहत्थों पर हाथ उठाते जल्दी लोगे नाश कराय ।
फतह होयगी गांधीजो को करी बुराई किसी की नाय ॥
नौकरशाही का पक्ष और न अपने पति से रही बतराय ।
लानत तेरी दाढ़ी मूछोंपर किसने मानस दिया बनाय ॥
निहत्थों पर हाथ उठाके काला मुख लिया करवाय ।
भानजी तेरो कान कांग्रेस में 'दिल्ली' भरती हुई जाय ॥
अब के नठ चलाओ वहाँ भी लाज नौकरी की रहजाय ।
लानत २ इस टुकड़ पर क्यों ना भीख मांगकर खाय ॥
यहां की बात यहांपर रहगई नमक लूटने गांधी जाय ।
इधर नमक पर वाइसराय ने बंदोबस्त दिया करवाय ॥
बोला धावा धरसाने पर गांधीजी ने एकदम आय ।
लाटसाब थे बम्बई वाले एकदम गये सनाका खाय ॥
मेरे गुइयां यह क्या होगई हमपर यह नहीं रोका जाय ।
जुल्म होजाय चलो पड़जाय जो यह नमक लूट लेजाय
बम्बई और मद्रास लोटजाय गुजरात और काठायावार ।
एकदम यहां से बंधे बिस्तरा जाता रहा रौब सरकार ॥

बड़े २ ज्वान पुलिस के जगी पलटन गोरी लई बुलाय।
वाइसराय से खबर मंगाकर अब वर उनको पकड़ा जाय
बक्त रात का तारे खिलरहे रात अंधेरी रही है छाय।
एक मील का चक्कर देकर बंदोबस्त लिया करवाय ॥
लगी रोशनी वहाँ गैसकी चींटी तक भी पड़े दिखाय ।
छल कपट और धोखे से आधी रात को पकड़ा जाय ॥
जेल यरवदा में पहुंचाये निगरानी कर लिये बिठाय ।
गवरमेंट कहै होय शाँता दूनी आग और लगजाय ॥
हमदर्दों को पेशावर में उनपर दिये बम्ब गिराय ।
फिर तैयब का लगा मोर्चा नमक पै हमला दिया कराय
मार मार बेगति करदीनी खून बदन से रहा चुचाय ।
इकदम पकड़ा तैयबजी को जिनकी उमर ७५ साल ।
अखबार बंद करा दिये सारे नहीं कोई सुनावे हाल ॥
फिर सरोजिनी वहांपर आई संगमें ज्वान थे कई हजार
लेकर अन्दर भगे सिपाही बैठ गये वो धरना मार ॥
सत्ताइस घंटे लगा मोर्चा अन्न नींद दई बिसराय ।
आखिर हार पुलिस की होगई एकदम गिरा तमारा खाय
अफसर अ० को ललकारा अ० तेरा बुरा होजाय ।
डूबगये हथियार तुम्हारे खाली हाथों गई हराय ॥
वाइसराय को यहां भी हारकी इकदम दीनी खबर पहुंचाय
हुआ सन्नाटा कौंसिल अन्दर कैसी उठा राम ने आय ॥

चले गवर्नर रात रात में धरसाने में पहुंचे जाय ।
पहरा देकर चौनफी को लई सरोजिनी कैद कराय ॥
जब रावण ने पकड़ी सिया को लंका का [illegible] नाश कराय
जब कंसा ने पकड़ी देवकी कृष्णचंद्र ने लिया गिराय ॥
जब दुर्योधन पकड़ी द्रोपदी महाभारत दिया कराय ।
जब सरकार ने पकड़ी सरोजिनी इनका [illegible] मूलसे जाय
हलचल मचगई भारत अन्दर हिंदु मुस्लिम गये रिसाय ।
बच्चा औरत निकले घर से झंडा सबने लिया उठाय ॥
फिर पटेलजी आये वहाँपर वाइसरायभी गये घबराय ।
गर ये धावा करैं नमक पर म्हारे राके रुकने नाँय ॥
दौड़ः खाय। पटेलजी ने नमक धावे को भै तैयार ।
बारिश होने लगी वहाँ पर सब पानी से भरगये ग्वार ॥
मालवीयजी स्यागन करके रनक्षेत्र में पहुंचे आय ।
विलायती कपड़ा पहरा लगाकर इकदम दिया बन्द कराय
मुसलमानो ने शराब के ऊपर अपना पहरा दिया बैठाय ।
ऐसा काम किया जोर से शोहरत दूर दूर होजाय ।
व्योहारी अंग्रेजों बीचैं मची बिलायत हाहाकार ॥
कई लाख निकट्ठू होगये सबके बंद भये रुजगार ॥
कहा बद्ध अमनी फैलो भारत में इसको दो बंद कराय ।
फिर मछली सूखा खाओगे बिरकुट मक्खन मिलना नायं

नये नये कानून बनाये हर जगह जारी दिये कराय ।
पाँच मनुष्य से ज्यादा पावें वही लेते कैद कराय ॥
इसी दफे को तोड़न खातिर छैछै वालंटियर निकले आय ।
जेल भरी अब हार मानगये वो भी एकदम लई उठाय ॥
कई जगह मारगुल्ला कर खून की नदी दई बहाय ।
बच्चा औरत भूखे मरगये घर में दीनी आग लगाय ॥
आखिर फतह हुई गांधी की मार्शल्ला भी लिया उठाय ।
अब गिराने बाकी रह गये बाद कान्फरैंस देखा जाय ॥
दे दे इस्तीफे कौंसल से बहुत से मेम्बर मिलगये आय ।
पटेलजी थे शान भारत के उनने भी दी लात लगाय ॥
बाकी सूखं हू । फिक्र में ईश्वर कैसे करे सहाय ।
रोज विस्फोट करै सुलह की लार्ड से ना बसाय ॥
सांप छछुन्दर की गत मुंह में दाब रहा पछताय ।
जो निगले तो कोढ़ी होजाय उगले तो अन्धा होजाय ॥
गांधीजी से सुलहा लेन को कई घरपर पहुंचे जाय ।
वाइसराय ने दई इजाजत बेशक मुल्क जेल में जाय ॥
कहा ग्यारह शर्तें मंजूर करलो तभी सुलह तुरन्त होजाय ।
हलचल मचगई इंगलेण्ड अन्दर दे दी हमको मंजूर नायं ॥
वजीर हिंद के कासिद बनके गाँधीजी पै पहुंचे जाय ।
अपना झगड़ा बन्द करो तुम गोलमेज पर सब मिलजाय ॥

लानत ऐसी गोलमेज पर जबतक शर्त झुकावैं नाथ।
हम हरगिज नहीं कदम धरेंगे चाहे जान रहे या जाय॥
वायसराय की जुडी कचहरीं बड़े बड़े बैठे सरदार।
गवर्नर बैठा बम्बइ वाला जैसा था माहिल सरदार॥
आखिर उसने पास कराई नाजाइज कानून करार।
जो कोई मेम्बर बने कांगरेस उसको वहीं करो गिरफ्तार॥
पिकटिंग लगाता जो कोई पावे उसकी दो तुम खाल उढ़ाय।
वालन्टियर कैद करो सब जिससे काम बन्द होजाय॥
मोतीलाल आनन्द भवन में सय्यद अहमद रहे बतराय।
नहीं मिलने दिया किसी को फ़ौरन लाये कैद कराय॥
अस्सी साल का पकड़ा बुड्ढा शोभा बरनन करी ना जाय।
उसी पदवी पर मालवीयजी ने अपना नाम दिया लिखवाय॥
यह तो किस्सा बहुत बड़ा है इसमें जगह रही है नायं।
जो चाहो कुल हाल जानना हिस्सा दूसरा लेओ मंगाय॥
जो हुजूर की थी एक औरत अपने पति से रही बतराय।
बुजदिल बनकर घर में बैठे काजल मिस्सीं लेवो लगाय॥
चूड़ी बस्तर पहनें मेरे तुम पर खिताब न छोड़ा जाय।
गर असनाब सब पिटे कांग्रेस में तुमको लाज आवती नायं॥
आखिर जो स्वराज्य मिलेगा किस मुंह से तू वहां पै जाय।
बीड़ा लेकर कक्ष में जाऊँ एकदम उठगये मुंह मुसकाय॥

गाँधीजी का यह फरमान है मत कोई देवो लगान ।
चाहे कोई मारें तुमको मतो हिलाओ आगे कान ॥
पचासन में दस मरजावें हमको नहा पडेगी हान ।
टैक्स मतीना देवो इनको यह समझें हमको हैवान ॥
घर विदेशी मता मंगाओ और ना इनसे लेना खांड ।
सब थानों को बन्द करावो इनको घर घर रावें रांड़ ॥
लगान उघाने कई ज़गह पर तंगी करन लगी सरकार ।
एक को मारें दस मरजावें घायल हो गये कई हजार ॥
यह गत देखी जगह जगह पर हार गई थी जब सरकार ।
लिया बहाना करें मुलतवी कार्तिक में देदेना यार ॥
बहुत से गुंडे देहातों में बहकाने को पहुंचे जाय ।
तुमको गांधी मरवा देगा सुनलो भाई कान लगाय ॥
जो कोई उनका कहना माने उनको दे सरदार बनाय ।
जो गाँधी को कोई माने हमपर देना रपट लिखाय ॥
शाम दाम और दन्ड भेद से किसी तरह से देवो दबाय ।
गुंडे भेज दिये गाँवों में बहुत से गांव दिये लुटवाय ॥
शूरवीर थे जाट और गूजर ठाकुर मैव चन्देले राय ।
बन्दर भबकी में नहीं आवे चाहें जान रहे चाहे जाय ॥
गान्धी की हम चलें कहन पर चाहें यहां कुछ भी होजाय ।
कुक्का बक्का करे हमारो तो भी हमको नहीं परवाय ॥

भोले देहाती यों बहकायें गाँधी बनियाँ जाति कहाय ।
मरवा देगा देहाती को और बनियों को देय बनाय ॥
गाँधी मरता जमींदारों को और गरीबों की करे सहाय ।
इसके राज में नाज बढ़ेगा मारे बनियाँ होवें तबाय ॥
तीन सेर की रुई खरीदें एक छटांक की बेचें आय ॥
घी मक्खन लेजायें यहां से घी चरबी का दें पहुंचाय ।
बड़े बड़े टेक्स लगाये तुम पर कोई वस्तु भी छोड़ी नाय ॥
धरती घर सब छीने तुमसे भाई भाई दिये लड़वाय ।
अपनी जमीं से कंकर खोदें उससे लें अर्जी लिखवाय ॥
एक अंगुल गर जमी बढ़ावे जभी देवें कैद कराय ॥

स्वराज में ना मिले किसी को जमींदारों का होगा राज ।
गाँव गांव में राजा करेंगे अपने सिर पर धर कर ताज ॥

बहुत से कुत्ते देहातों में इसके टुकड़े रहे जो खाय ।
एक रुपये में गवरमेंट को सौ सौ रुपये रहे दिलाय ॥
नाहीं समझें वो नमक हरामी मतलब पर रहे भैंस कटाय ।
नित तारीफ करें अंग्रेजों की गांधी को रहे दोष लगाय ॥
ज़बरदस्त हाकिम अंग्रेज़ी एक एक को दे मरवाय ।
अब भी पंखा खेंचो इनका ये बंगला रहें मौज़ उड़ाय ॥
आँख उठाकर देखो भाई इससे बुरी दशा होजाय ।
मत ना इनसे खरीदो कपड़ा खद्दर से लो ध्यान लगाय ॥
चरखा कातो घर घर औरत ज़लदी स्वराज्य तुम्हें मिलजाय ॥
गुन्डे कैदी छोड़ दिये हैं उनके हल्ला रहे मचवाय ।
बहुत से साहू लूट लिये हैं दिन में डाके मारे जाय ॥
गर इनके पकड़न के लिये रपट लिखाने थाने जायं ।

ये साफ सुनावें थाने वाले गान्धी को लेवो बुलाय ॥
ईश्वर से यह मेरी अर्ज़ी इनका जवां सफल होजाय ।
खुद कहते हैं बसका नहीं है अपना गान्धी लेवो बुलाय ॥

गजल

(ले०—दरोगा अहमद मलिक सब्जी मंडी)

आहों का जमाने को हम रंग दिखा देंगे ।
या हमी मिटैं यारो या इनको मिटा देंगे ॥
बेकस वो ज़माने में क्या हमको समझते हैं ।
बेकस हैं मगर बेकस दुनियां को हिलादेंगे ॥
आसान न समझें ये कांग्रेस को मिटा देना ।
मिटकर भी जमाने से हम इनको मिटादेंगे ॥
नाजां हैं वो क्या अपनी गन तोप मशीनों पर ।
चर्खे की मशीनों से हम इनको उड़ा देंगे ॥
खाई है कसम हमने पहनेंगे स्वदेशी ।
घर में जो विदेशी हैं चूल्हे में जला देंगे ॥
ये हमको खबर क्या थी सरकारे मौअज्जम भी ।
कुछ कहके ज़बां से और कुछ करके दिखादेंगे ॥
भाई का जब भाई दुश्मन हो जमाने में ।
फिर तुमसे भला गैरो क्या मिलके निभादेंगे ॥
'अहमद' न झिझकना तुम हिम्मत से कदम रखना ।
देखें तो जमाने में किस किस को मिटादेंगे ॥

हमारे एजेन्ट— इशफाक अलीशाह इमली की पहाड़ी देहली
बाबू रघुनाथप्रसाद मालीवाड़ा देहली